

प्रेषक,

पी०सी० शर्मा,
प्रमुख सचिव,
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

जिलाधिकारी,
हरिद्वार।

राजस्व अनुभाग-2

देहरादून: दिनांक: ॥ नवम्बर, 2011

विषय:- मै० महालक्ष्मी टिम्बर एवं प्लाईवुड, नई दिल्ली को ग्राम मोहम्मदपुर कुन्हारी, परगना ज्वालापुर, जनपद हरिद्वार में प्लाईवुड फैक्ट्री की स्थापना हेतु कुल 0.1670 है० भूमि क्य की अनुमति प्रदान किये जाने के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र संख्या-486/भूमि व्यवस्था-भूमि क्य दि०-४.६.२०१० के सन्दर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि श्री राज्यपाल, मै० महालक्ष्मी टिम्बर एवं प्लाईवुड, नई दिल्ली को ग्राम मोहम्मदपुर कुन्हारी, परगना ज्वालापुर, जनपद हरिद्वार में प्लाईवुड फैक्ट्री की स्थापना हेतु कुल 0.1670 है० भूमि क्य की अनुमति, उत्तराखण्ड (उत्तर प्रदेश जर्मींदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था अधिनियम, 1950) (अनुकूलन एवं उपान्तरण आदेश, 2001) (संशोधन) अधिनियम, 2003 दिनांक 15-१-२००४ की धारा-154(4)(3)(क)(v) के अन्तर्गत एवं औद्योगिक विकास विभाग, उत्तराखण्ड शासन की सहमति के क्रम में निम्नलिखित शर्तों/प्रतिबन्धों के साथ प्रदान करते हैं:-

- 1- केता धारा-129-ख के अधीन विशेष श्रेणी का भूमिधर बना रहेगा और ऐसा भूमिधर भविष्य में केवल राज्य सरकार या जिले के कलैक्टर, जैसी भी स्थिति हो, की अनुमति से ही भूमि क्य करने के लिये अर्ह होगा।
- 2- केता बैंक या वित्तीय संस्थाओं से ऋण प्राप्त करने के लिये अपनी भूमि बन्धक या दृष्टि बन्धित कर सकेगा तथा धारा-129 के अन्तर्गत भूमिधरी अधिकारों से प्राप्त होने वाले अन्य लाभों को भी ग्रहण कर सकेगा।
- 3- केता द्वारा क्य की गई भूमि का उपयोग दो वर्ष की अवधि के अन्दर, जिसकी गणना भूमि के विक्य विलेख के पंजीकरण की तिथि से की जायेगी अथवा उसके बाद ऐसी अवधि के अन्दर जिसको राज्य सरकार द्वारा ऐसे कारणों से जिन्हें लिखित रूप में अभिलिखित किया जायेगा, उसी प्रयोजन (टिम्बर एवं प्लाईवुड विनिर्माण उद्योग की स्थापना) के लिये करेगा जिसके लिये अनुज्ञा प्रदान की गई है। यदि वह ऐसा नहीं करता अथवा उस भूमि का उपयोग जिसके लिये उसे स्वीकृत किया गया था, उससे भिन्न किसी अन्य प्रयोजन हेतु करता है अथवा जिस प्रयोजनार्थ क्य किया गया था उससे भिन्न प्रयोजन के लिये

विक्रय, उपहार या अन्यथा भूमि का अन्तरण करता है तो ऐसा अन्तरण उक्त अधिनियम के प्रयोजन हेतु शून्य हो जायेगा और धारा-167 के परिणाम लागू होगा।

4— जिस भूमि का संक्रमण प्रस्तावित है, उसके भूस्वामी अनुसूचित जाति/जनजाति के न हों और अनुसूचित जाति/जनजाति के भूमिधर होने की स्थिति में भूमि क्रय से पूर्व सम्बन्धित जिलाधिकारी से नियमानुसार अनुमति प्राप्त की जायेगी।

5— जिस भूमि का संक्रमण प्रस्तावित है, उसके भूस्वामी असंक्रमणीय अधिकार वाले भूमिधर न हों।

6— शासन द्वारा दी गई भूमि क्रय की अनुमति शासनादेश निर्गत होने की तिथि से 180 दिन तक वैध रहेगी।

7— सम्बन्धित आवेदक द्वारा भू-उपयोग करने से पूर्व सक्षम एजेन्सी (विनियमित क्षेत्र प्राधिकरण/विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण/विकास प्रोधिकरण) से नियमानुसार अनापत्ति प्राप्त करनी होगी तभी वह भूमि का उपयोग निर्धारित कार्य हेतु कर सकेंगे।

8— किसी भी दशा में प्रस्तावित क्रेताओं को प्रस्तावित भूमि के अतिरिक्त अन्य भूमि के उपयोग की अनुमति नहीं होगी एंव सार्वजनिक उपयोग की भूमि या अन्य कोई भूमि पर कब्जा न हो इसके लिये भूमि क्रय के तत्काल बाद उसका सीमांकन कर लिया जाये।

9— सम्बन्धित इकाई द्वारा स्थापित किये जाने वाले उद्योग में उत्तरखण्ड मूल के बेरोजगारों को न्यूनतम 70 प्रतिशत से अधिक का नियमित रोजगार उपलब्ध कराया जायेगा।

10— इकाई द्वारा क्रय की जाने वाली भूमि का उपयोग "टिम्बर एंव प्लाईवुड विनिर्माण उद्योग की स्थापना" के लिए ही किया जाएगा।

11— क्रय की जाने वाली भूमि का उपयोग भू-उपयोग यदि औद्योगिक से भिन्न हो, तो उसे नियमानुसार औद्योगिक में परिवर्तित कराकर शासन द्वारा निर्धारित नीति/मार्गदर्शी सिद्धान्तों के अन्तर्गत प्रचलित नियमों/मानकों एंव भवन उपविधियों के अंतर्गत नियमानुसार कार्यवाही करते हुए औद्योगिक प्रयोजन हेतु फैक्ट्री भवन निर्माण का प्लान सीड़ा/सक्षतम प्राधिकारी से स्वीकृत कराने के पश्चात ही स्थल पर निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जाएगा।

12— क्रय की जानी वाली भूमि पर इकाई को केन्द्रीय औद्योगिक पैकेज का लाभ अनुमन्य नहीं होगा।

13— यह सुनिश्चित कर लिया जाएगा की क्रय हेतु प्रस्तावित भूमि समस्त वर्जनाओं/भार से विमुक्त है तथा संबंधित भूमि के क्रय विक्रय से किसी भूमि संबंधित कानून/विनियमों का उल्लंघन नहीं होता है।

14— भूमि का विक्रय अपरिहार्य परिस्थितियों के अतिरिक्त अनुमन्य नहीं होगा एंव ऐसी दशा में विक्रय किये जाने हेतु सकारण शासन का अनुमोदन प्राप्त करना होगा।

15— योजना प्रारम्भ से पूर्व नियमानुसार वन विभाग एंव अन्य सम्बन्धित विभागों/संस्थाओं से विधिक व अन्य अनापत्तियों/स्वीकृतियों प्राप्त कर ली जायेगी।

16— उपरोक्त प्रतिबन्धों/शर्तों का पूर्णतः अनुपालन न होने पर तथा भिन्न उपयोग करने, उल्लंघन हाने की दशा में अथवा किसी अन्य कारणों से, जिसे शासन उचित समझता हो, प्रश्नगत स्वीकृति निरस्त कर दी जायेगी।

कृपया तत्क्रम में नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही करते हुए कृत कार्यवाही से शासन को भी अवगत कराने का कष्ट करें।

भवदीय,
(पी०सी० शर्मा)
प्रमुख सचिव।

पृ०प०सं०-४६३ / संमिनांकित / 2011

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषितः—

- 1— मुख्य राजस्व आयुक्त, उत्तराखण्ड, देहरादून।
- 2— प्रमुख सचिव, औद्योगिक विकास विभाग, उत्तराखण्ड शासन।
- 3— सचिव, श्रम एवं सेवायोजन विभाग, उत्तराखण्ड शासन।
- 4— आयुक्त, गढ़वाल मण्डल, पौड़ी।
- 5— श्री नरोत्तम कुमार केड़िया, प्रो० मै० महालक्ष्मी टिम्बर एवं प्लाईवुड, 31 कटरा, ईश्वर भवन, खारी बावली, तीसरा, दिल्ली—110006
- 6— निदेशक, एन०आई०सी०, उत्तराखण्ड, सचिवालय।
- 7— प्रभारी मीडिया केन्द्र, सचिवालय।
- 8— गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

(सन्तोष बडोनी)
अनुसचिव।